आलेखः

डीएसपी रैंक के अधिकारी द्वारा मायावती के जूते साफ करने पर विःशेषः

इस चम्पी में बड़े–बड़े गुन

कहते हैं युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ में द्वारिका के राजा कृष्ण ने न सिर्फ आगंतुको के पाँव धोने का कार्य किया वरन् भोजन करने के पश्चात् उनके झूठे पत्तल भी उठाये। इसो द्वारिकाधीश कृष्ण ने अत्यन्त विपन्न अवस्था में द्वारिका आये अपने बालसखा सुदामा के भी पाँव के कांटे स्वयं अपने हाथों से निकाले। उन्होंने न सिर्फ उसके पाँव के कांटे निकाले, अपने भाव अश्रुओं की बाढ़ से उन पाँवों को अभिषिक्त भी किया। एक वो युग था जब राजा अधिकाधिक विन्रम होने में अपने भाग्य का गौरव मानता था एवं एक यह जमाना है जब बड़े–बड़े राजनेता अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से जूते तक साफ करवाने में नहीं हिचकते। सत्तानशीनों की इन्हीं हरकतों को देखकर लगता है सचमुच कलियुग चरम पर है। 'जेतो ऊँचो होत है तेतो नमत रसाल' वाली बातें तो इतिहास में जमींदोज हो गई लगती है।

बीते दिनों औरेया यात्रा के दरम्यान हेलिकॉप्टर से उतरते समय उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री मायावती को जब लगा कि उनके जूते धूल से भरे हैं तो उन्होंने अपने पीएसओ जो डीएसपी रैंक के अधिकारी हैं को गुपचुप अपने धूल भरे जूतों के बारे में बताया। आश्चर्य! उस अधिकारी ने आनन–फानन अपने रूमाल से यह जूते साफ भी कर दिये। इससे बड़ा आश्चर्य यह भी है कि मायावती एवं वहाँ खड़े सभी लोगों ने इस शर्मनाक, चापलूस कृत्य को अत्यन्त सहज भाव से ऐसे देखा जैसे अफसर राजनेताओं के जूते साफ नहीं करेंगे तो और कौन करेंगे? एक वे राजनेता थे जिनके जूतों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये दुर्गम रास्तों की खाक छानी एवं जो जनता से कहते थे कि 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' एवं एक यह जो जूते साफ करवाना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। लगता है आज के राजनेताओं के जूते रास्ता भटक गये हैं। यह वाकया बताता है कि सरकारी कृपा के तलबगार अफसर स्वाभिमान की राहों को कितना पीछे छोड़ आये हैं। देश में फिर इन्हीं आकाओं के इशारे पर, बिना सोचे–समझे यही अधिकारी अगर करोड़ो रूपये के घोटालों को बेहिचक अंजाम दे रहे हों तो इसमें आश्चर्य क्या है? इन राजनेताओं के नखरे तो देखो, सत्ता प्राप्ति के पहले जहाँ इनके जूतों से अंगूठे झांकते है, सत्ता मिलते ही इन्हें जूतों पर पड़ी धूल भी बरदाश्त नहीं होती। कहाँ वे गाँधी थे जिनके जूते स्वातंत्र्य के जुनून में सदैव धूल से सने होते थे, जो अपने एक–एक काम को यहाँ तक की अपनी धोती–लंगोटी तक अपने चरखे पर बुनते थे एवं कहाँ आज के एरिस्ट्रोकेट राजनेता जो ऐसे स्तरहीन चापलूसों की भीड़ इकट्ठी कर अपने लोकप्रिय होने का प्रमाण देते हैं।

चापलूस मात्र सरकारी अधिकारी ही नहीं है। इस स्पर्धा में राजनेता भी एक से एक बढ़कर है। किसी जमाने में राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी ने तत्कालीन युवा नेता संजय गाँधी को अपने कंधे पर बिठाकर उनका अभिवादन किया था। चन्द्रकान्त बरूआ ने किसी जमाने में इंदिरा गाँधी के लिये कहा था 'इंदिरा इज इंडिया एण्ड इंडिया इज इंदिरा'। तब उनके इस स्टेटमेंट का कड़ा विरोध हुआ था। प्रधानमंत्री भी राष्ट्र के सेवक हैं, उन्हें राष्ट्र अस्तित्व के समतुल्य रख देना कितनी घिनौनी बात है। आज जब इंदिराजी एवं बरूआ दोनों नहीं हैं तो बरूआ स्वर्ग से झांककर देख सकते हैं कि इंदिराजी के बिना भी इंडिया है। निश्चय ही इंदिराजी ने जो कुछ इस देश के लिये किया वह अविस्मरणीय है पर उनके इर्द–गिर्द खड़े चापलूसों द्वारा सत्ता प्राप्ति के लिये इतने निम्नतर सोपानों पर उतर आना आम रियाया को क्या दिशा देगा, इस पर चिंतन लाजमी है।

आज बरसाती मेंढ़कों की तरह हर क्षेत्र में चापलूसों की बाढ़ आ गयी है। पद एवं पदोन्नति प्राप्त करने के लिये हम किसी सीमा तक जाने को तैयार हैं। यही कारण है कि हर क्षेत्र में सच्चे, ईमानदार एवं कर्मठ कार्यकर्ता हाशिये पर हैं। उच्चस्थ अधिकारियों एवं राजनेताओं

की चापलूसी कर आगे आने वाले अकर्मण्य लोगों को मंचों से माला पहनते हुए अथवा नैतिकता पर वक्तव्य देते हुए देखते हैं तो लगता है दुर्दिन अब दूर नहीं है। आज आम धारणा बन गई है कि काम करने की जरूरत ही कहाँ है? बस चमचागिरी करो, अफसरां के जूते चमकाओ और मस्त रहो। इस चम्पी में बड़े–बड़े गुन। उन्हें ऐसे लोगों की ही तो दरकार है। काम जाये भाड़ में। वे गैरतमंद एवं पानीदार लोग हवा हुए जो कहते थे कि 'संत को का सीकरी से काम'। आज अफसरों एवं राजनेताओं के इर्द–गिर्द एवं उनके ड्राईंगरूम में चापलूसों की भीड़ का दीदार आप कभी भी कर सकते हैं। जीवनमूल्य आज ऐसे अंधकूप में जा गिरे हैं जहाँ से उनका ऊपर उठना असंभव–सा लगता है। आज सदाचार विपन्न एवं दुराचार वैभवसंपन्न होकर सभ्यता एवं संस्कृति के मूलभूत सिद्धांतों को ठेंगा दिखा रहा है। उच्चाधिकारियों की कृपा के लिए हम कुछ भी करने को तैयार हैं बस येन–केन–प्रकारेन यह कृपा हमें मिल जाये। सरकारी अधिकारियों के इसी नैतिक स्तर के चलते आज नित नये घोटाले उजागर हो रह हैं। अगर कुछ अधिकारी ईमानदार होने का साहस भी करते हैं तो उच्चाधिकारी उनकी गोपनीय रिर्पोट्स बिगाड़ देते हैं। उन्हें फिर ताउम्र चमचों के अधीनस्थ काय करने को मजबूर होना पड़ता है। ईमानदारी आज विधवा एवं बेईमानी सुहागन का जीवन जी रही है। चापलूसी पदलोलुप लोगों की शैली हो चली है। ऐसे में हमें एक ऐसे प्रशासकीय सिस्टम को इजाद करना होगा जिसमें मात्र ईमानदार आगे आऐ। इस कड़ी में पहला कार्य गोपनीय रिर्पोट्स लिखना बंद होना चाहिए। यही पाप की जड़ है। हर पदोन्नति योग्यता परीक्षा एवं कार्यनिष्पादन के आधार पर हो तो चमचे बगले झांकते नजर आयेंगे।

बहरहाल मायावती ने भी गंदे जूतों की भली चिंता की। आज आम रियाया को राजनेताओं से इतनी नफरत है कि वह बगैर जूते भी मंच पर चली जाती तो कहीं न कहीं से यह सौगात उन्हें मिल ही जाती। जूते मंच पर आने से प्रसिद्धी का ग्राफ भी रातों रात बढ़ जाता है। बड़े–बड़े नेता भी इन्हीं पनहईयों को प्राप्तकर लोकप्रिय हो चुके हैं। बुश–अडवानी–चिदंबरम तक को यह अमूल्य उपहार मंच पर मिल चुके हैं। एक शायर का कलाम शायद इस प्रसंग में खरा उतरे –

इक शाम किसी बज़्म में जूते जो खो गये।
हमने कहा बतायें घर कैसे जायेंगे।।
कहने लगे कि शेर सुनते रहो यूँ ही।
गिनते नहीं बनेंगे अभी इतने आयेंगे।।

लेखक

(हरिप्रकाश राठी)

पता :–
94141–32483
सी–136, प्रथम विस्तार,
कमला नेहरू नगर, जोधपुर।
लेखक साहित्यकार है।